विचार प्रवाह

संस्कार का वास्तविक अर्थ

राजा रघुवंशी , अमन शर्मा , साहिल जैसे युवा लड़के हो या दीपिका, ट्वीशा शर्मा जैसी युवा लड़कियां जब विवाह में त्रासदी के कारण ये जीवन छोड़ देते है तो समाज की टूटती परिवार व्यवस्था पर बहुत दुख होता है । पाप की परी बनाने के चक्कर में हमने लड़कियों को सामान्य मानवीय शिष्टाचार से ही दूर कर दिया।

भारत में विवाह और परिवार केवल दो व्यक्तियों का संबंध नहीं, बल्कि दो संस्कृतियों, दो परिवारों और दो जीवन-दृष्टियों का मिलन माना जाता है। लेकिन आधुनिक समय में जब भी किसी विवाह में तनाव, कलह या तलाक की स्थिति बनती है, तो समाज का एक बड़ा वर्ग बिना पूरी सच्चाई जाने तुरंत लड़के और उसके परिवार को दोषी ठहराने लगता है। यह भी सत्य है कि अनेक मामलों में बहुओं पर अत्याचार होते हैं, दहेज और हिंसा जैसी गंभीर समस्याएँ आज भी मौजूद हैं। परंतु यह भी उतना ही आवश्यक है कि हर मामले को एक ही चश्मे से न देखा जाए।

आज का समाज अक्सर बेटियों को 'राजकुमारी' बनाकर पालने में इतना व्यस्त हो गया है कि कई बार उन्हें जिम्मेदारियों, सहनशीलता,

सामंजस्य और परिवार की वास्तविकताओं के लिए तैयार ही नहीं किया जाता। आत्मनिर्भर बनाना और हर इच्छा पूरी करना दो अलग बातें हैं। स्वतंत्रता का अर्थ यह नहीं कि व्यक्ति किसी भी रिश्ते में केवल अधिकार देखे और कर्तव्यों को नजरअंदाज कर दे।

विवाह केवल प्रेम और आकर्षण से नहीं चलता। उसमें धैर्य, त्याग, सहयोग और समायोजन की आवश्यकता होती है – और यह जिम्मेदारी केवल लड़के या उसके परिवार की नहीं, लड़की की भी होती है। कई बार छोटी-छोटी बातों पर अहंकार, सोशल मीडिया से प्रभावित अवास्तविक अपेक्षाएँ, 'मैं क्यों झुकूँ?' जैसी मानसिकता और हर असहमति को 'अपमान' समझ लेने की प्रवृत्ति रिश्तों को कमजोर कर देती है।

यह भी देखा गया है कि कुछ परिवार अपनी बेटियों को घर के छोटे-छोटे कार्यों, बड़ों के सम्मान, आर्थिक समझ और पारिवारिक जिम्मेदारियों से दूर रखते हैं। परिणाम यह होता है कि विवाह के बाद सामान्य पारिवारिक अपेक्षाएँ भी उन्हें 'बंधन' लगने लगती हैं। फिर हर विवाद में केवल ससुराल पक्ष को दोष देना आसान हो जाता है।

समाज को यह समझना होगा कि संस्कार का अर्थ केवल लड़की को चुप रहना सिखाना नहीं है, बल्कि बेटे और बेटी – दोनों को संवेदनशील, जिम्मेदार और रिश्तों का सम्मान करने वाला इंसान बनाना है। यदि बेटों को यह सिखाया जाना चाहिए कि पत्नी का सम्मान करें, तो बेटियों को भी यह समझना चाहिए कि विवाह साझेदारी है, प्रतियोगिता नहीं।

आज कई परिवार टूट रहे हैं , कई बच्चे कलह से घबरा कर जीवन से ही पलायन कर रहे हैं, क्योंकि हम बच्चों को करियर तो सिखा रहे हैं, लेकिन रिश्ते निभाने की कला नहीं सिखा रहे। विवाह में मतभेद होना स्वाभाविक है, पर हर मतभेद तलाक या जीवन से पलायन का कारण नहीं होना चाहिए। हर बार एक पक्ष को खलनायक और दूसरे को पीड़ित मान लेना न्याय नहीं, बल्कि सामाजिक पूर्वाग्रह है।

आवश्यकता इस बात की है कि हम संतुलित दृष्टिकोण अपनाएँ। न तो हर लड़का दोषी होता है, न हर लड़की निर्दोष। रिश्ते तब मजबूत बनते हैं जब दोनों पक्ष अपनी-अपनी जिम्मेदारियाँ समझते हैं, संवाद करते हैं और परिवार को 'मैं' नहीं बल्कि 'हम' की भावना से देखते हैं। संस्कार का वास्तविक अर्थ यही है – अधिकार और कर्तव्य, दोनों का संतुलन।

– नीना जैन लाइफ कोच दूरदर्शन एंकर

रोहिणी तपेगी या फिर गलेगी?

इन्दौर। रोहिणी नक्षत्र का चौथा दिन है । सड़कों पर आने जाने वाले यात्री जरूरी काम के लिए ही आना-जाना करता है । इन नौ दिनों में सूर्य की किरणों में भयंकर तापमान रहता है । इसमें सूर्य की किरणे सीधे पृथ्वी पर अपने तेज का प्रभाव डालती है । रहवासी भी बुरी तरह से परेशान हो रहा है । उमस से बचने के लिए युवकों से लेकर बूढ़े व्यक्ति भी अपने सिर पर कपड़े से ढांककर चल रहा है ताकि गर्मी की उमस (लू) से बचा जा सके । गर्मी का एक कारण धरती से वर्षों पुराने छायादार पेड़ों को बेरहमी से काटा जाना भी है ।

पिछले 3-4 वर्षों से देखने में आ रहा है कि रोहिणी में ही पानी की बौछार होने लगती है । कहीं- कहीं हवा के साथ बारिश भी होने लगती है जो रोहिणी को गलने का संकेत देती है । हमारी मान्यता है कि यदि रोहिणी नक्षत्र में पानी गिरने की शुरुआत होती है तो उस वर्ष बारिश के कम होने की संभावना भी बढ़ जाती है । पहले 30-35 इंच में मालवा में पानी की पूर्ति हो जाया करती थी, परन्तु उस समय सीमेन्ट की सड़कें नही थी । कच्ची जमीन खुली अवस्था में रहती थी तो बारिश का पानी बहने के बजाय सीधे जमीन में चले जाया करता था । बड़े- बड़े वृक्ष भी पानी को पीकर जड़ के माध्यम से पानी को जमीन में उतार देते थे । इससे जमीन का धरती की गर्मी को शांत करता था । अब धरती पर जरूरत से ज्यादा पेड़ काट दिए गए है । सड़कों पर सीमेन्ट का जाल सा बिछा दिया है । जमीन से बोरिंग के माध्यम से पानी उपयोग में लिया जा रहा है इससे जमीन के अन्दर का पातालि पानी भी खत्म हो गया है । इसलिए गर्मी और उमस इसलिए अब 30-35 इंच के बजाय 40 इंच से ज्यादा बारिश की जरूरत है । तभी धरती की पूरी तरह से प्यास बुझ सकती है । इसके लिए नगर निगम को जितना पानी बोरिंग से लिया जाना है उतना पानी जमीन में भेजने का दायित्व भी नगर निगम का है । इसलिए मकान मालिकों से जमीन में पानी भिजवाने की योजना बनाकर बारिश के समय ज्यादा से ज्यादा पानी को अनिवार्य रूप से पानी भेजने का दायित्व दिया जाता है तो धरती की उमस में शीतलता आ सकती है । हाल ही में अरब सागर से जो पानी बनकर आ रहा है उससे मौसम वैज्ञानिकों ने 3-4 दिन पर बारिश व हल्के रूप से बारिश की संभावना बताई है । इससे फिर वहीं स्थिति दिखाई दे रही है कि इस वर्ष भी रोहिणी तपेगी या गलेगी की स्थिति दिखाई दे रही है ।

कार्टून कोना

रेडिसन चौराहा: सुगम यातायात का 'शॉर्टकट' और सड़कों पर पसरती बेपरवाही

इंदौर की पहचान उसकी सुगढ़ता, स्वच्छता और अनुशासन से है। लेकिन, रेडिसन चौराहे की आज की तस्वीर कुछ और ही कहानी कह रही है। जिस चौराहे को शहर का प्रवेश द्वार और सुगम यातायात का मॉडल माना जाता था, वहां आज मौत का खेल खुलेआम खेला जा रहा है।

तस्वीरें चीख-चीख कर गवाही दे रही हैं, वहां से गुजरते वे वाहन जो नियम को नहीं, बल्कि अपनी सुविधा को संविधान मान बैठे हैं। रॉन्ग साइड से वाहन दौड़ाने वालों की यह होड़ कोई महज यातायात का उल्लंघन नहीं है; यह उस सोच का प्रमाण है जो मैं को हम से ऊपर रखती है। यह उस शॉर्टकट की बीमारी है, जो चंद सेकंड बचाने के लिए किसी की पूरी जिंदगी को दांव पर लगाने से गुरेज नहीं करती।

सवाल केवल यातायात पुलिस की कार्यप्रणाली का नहीं है, हालांकि, चौराहे पर तैनात वर्दी का मौन होना व्यवस्था की उस जड़ता को दर्शाता है, जो अक्सर किसी बड़े हादसे की राख से ही जागती है। सवाल हम सबका भी है। क्या लेफ्ट टर्न पर रॉन्ग साइड से आने वाला वह वाहन चालक किसी दूसरे ग्रह से आया है? नहीं, वह हमारे-आपके बीच का ही कोई सभ्य नागरिक है।

हम अपनी सुविधा के लिए नियमों को ठेंगा दिखाते हैं और फिर उम्मीद करते हैं कि शहर की व्यवस्था स्मार्ट रहे। यह दोहरापन ही हमारे पतन का कारण बन रहा है। अतुल जैन जैसे जागरूक नागरिकों द्वारा भेजी गई तस्वीर केवल सबूत नहीं हैं, ये चेतावनी का जाल नहीं हैं; ये हमारे साझा जीवन का हिस्सा हैं। यहाँ चलने वाला हर शख्स किसी का पिता है, किसी का बेटा है। जिस दिन हम सड़क पर उतरकर खुद को नहीं, बल्कि दूसरे की सुरक्षा को प्राथमिकता देना शुरू कर देंगे, शायद उस दिन रेडिसन चौराहे का यह डेथ-ट्रैप फिर से सेफ-जोन में बदल जाएगा।

प्रशासन जागे, यह तो उसकी नियति है। लेकिन समाज को भी अब मुझे क्या की उस चादर को उतार फेंकना होगा, जिसने हमारी संवेदनाओं को ढक रखा है। याद रखिए, सड़क पर नियम टूटना केवल प्रशासनिक विफलता नहीं है, यह हमारी सामूहिक चेतना के टूटने का संकेत है।

GHRDC सर्वे 2026 में SIHM इंदौर का शानदार प्रदर्शन, मध्य क्षेत्र में बनाई विशेष पहचान

इन्दौर। स्टेट इंस्टीट्यूट ऑफ होटल मैनेजमेंट (SIHM) इंदौर ने प्रतिष्ठित GHRDC होटल मैनेजमेंट इंस्टीट्यूट सर्वे 2026 में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए मध्य प्रदेश और पूर्वी-मध्य भारत क्षेत्र में अपनी मजबूत पहचान स्थापित की है। संस्थान को विभिन्न श्रेणियों में उल्लेखनीय रैंक प्राप्त हुई है, जिससे होटल मैनेजमेंट शिक्षा के क्षेत्र में इंदौर का गौरव बढ़ा है।

सर्वे में SIHM इंदौर को मध्य प्रदेश के सभी शासकीय होटल प्रबंधन संस्थानों में द्वितीय स्थान प्राप्त हुआ है। वहीं पूर्वी एवं मध्य क्षेत्र के शासकीय संस्थानों में संस्थान को पाँचवीं रैंक तथा अखिल भारतीय स्तर पर पूर्वी एवं मध्य क्षेत्र की श्रेणी में 16वीं रैंक हासिल हुई है। इसके साथ ही राज्य-स्वामित्व वाले होटल प्रबंधन संस्थानों की श्रेणी में SIHM इंदौर को प्रथम स्थान प्राप्त हुआ है।

यह रैंकिंग भौतिक एवं शैक्षणिक अधोसंरचना, संकाय शोध एवं प्रकाशन, पाठ्यक्रम एवं शिक्षण प्रणाली तथा राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय प्लेसमेंट, सामाजिक उत्तरदायित्व एवं उद्योग जगत से जुड़ाव जैसे प्रमुख मानकों के आधार पर जारी की गई। कुल 1450 अंकों में से संस्थान ने 924.44 अंक अर्जित किए। विशेष रूप से प्लेसमेंट तथा संकाय शोध एवं प्रकाशन के क्षेत्र में संस्थान को अत्यंत सराहनीय अंक प्राप्त हुए हैं।

संस्थान के प्राचार्य डॉ. वी.के. सिंह ने इस उपलब्धि पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि यह केवल एक रैंकिंग नहीं, बल्कि पूरे SIHM परिवार के सामूहिक परिश्रम, अनुशासन और उत्कृष्टता के प्रति समर्पण का परिणाम है। उन्होंने विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं कर्मचारियों को बधाई देते हुए कहा कि विद्यार्थियों की मेहनत और उद्योग जगत में उनके उत्कृष्ट प्रदर्शन ने संस्थान को यह मुकाम दिलाया है।

डॉ. सिंह ने विशेष रूप से श्री अमोल एवं डॉ. मोनिशा के योगदान की सराहना करते हुए कहा कि दोनों ने सर्वे संबंधी समस्त डेटा संकलन एवं समन्वय कार्य को पूरी निष्ठा और समर्पण के साथ समय पर पूरा किया। उन्होंने कहा कि यह उपलब्धि अंतिम लक्ष्य नहीं, बल्कि देश का नंबर-1 शासकीय होटल प्रबंधन संस्थान बनने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पड़ाव है। स्ट्राइव इंदौर केवल रोजगार के लिए प्रशिक्षण नहीं देता, बल्कि भविष्य के आतिथ्य उद्योग के नेतृत्वकर्ता तैयार करता है।

एसएसटीडी के कार्य समय पर पूर्ण करने के निर्देश

इंदौर। मध्यप्रदेश पश्चिम क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी इंदौर के प्रबंध निदेशक श्री अनुप कुमार सिंह बुधवार की शाम एसएसटीडी अंतर्गत स्वीकृत कार्यों की समीक्षा की। उन्होंने सभी 15 जिलों के अधीक्षण यंत्रियों एवं एसटीसी प्रभारियों से चर्चा कर अपने अपने क्षेत्र के कार्य समय पर पूर्ण कराने के निर्देश दिए। एनएचआई, रेलवे, वन विभाग से अनुमति समय पर प्राप्त कर कार्य की प्रगति के लिए निर्देशित किया गया। श्री सिंह ने कहा कि नए ग्रिड, 33 केवी लाइन, 11 केवी लाइन, ट्रांसफार्मर, पावर ट्रांसफार्मर क्षमता वृद्धि इस तरह के कार्यों से लाखों उपभोक्ताओं के लिए और ज्यादा गुणवत्ता के साथ बिजली मिलेगी। इस अवसर पर कार्यपालक निदेशक श्री एसएल करवाड़िया, मुख्य अभियंता श्री अचल जैन, अतिरिक्त मुख्य महाप्रबंधक श्री संजय मालवीय, श्री सुनील पटौदी, मुख्य वित्त अधिकारी श्री अजयपाल सिंह अवासया, श्री राजेश माहौर, श्री आरवी दोहरे, शहर अधीक्षण यंत्री श्री डीके गाठे, श्री विनोवा तिवारी आदि प्रमुख रूप से मौजूद थे।

मोबाइल स्क्रीन से दूर, बोर्ड गेम्स के जरिए जुड़ी दोस्तों की महफिल

इंदौर। तेजी से डिजिटल होती जिंदगी के बीच शहर में आयोजित 'द सोशल शफल' ने लोगों को स्क्रीन से दूर निकालकर एक ही टेबल पर बैठने का मौका दिया। बोर्ड गेम्स के जरिए हुए इस आयोजन में परिवार, दोस्त और अलग-अलग उम्र के लोग साथ आए। खेल के साथ बातचीत, हंसी-मजाक और नए लोगों से जुड़ने का माहौल पूरे कार्यक्रम में देखने को मिला। क्रोजोन कैफे में आयोजित इस खास इवेंट में प्रतिभागियों ने कई इंटरैक्टिव बोर्ड गेम्स खेले और सोशल एक्टिविटीज में हिस्सा लिया। Meet. Play. Belong. थीम पर आधारित इस आयोजन का उद्देश्य सिर्फ मनोरंजन नहीं बल्कि लोगों को एक पॉजिटिव कम्युनिटी से जोड़ना था। बोर्ड गेम्स बच्चों और बड़ों दोनों में फोकस, रणनीति बनाने की क्षमता, टीमवर्क और कम्युनिकेशन स्किल बेहतर करने में मदद करते हैं। यही वजह है कि शहर में इस तरह के सोशल गेमिंग इवेंट्स को लेकर उत्साह बढ़ रहा है। ऑर्गेनाइजर गुरप्रीत टूटेजा ने बताया कि बोर्ड गेम्स डिजिटल डेटॉक्स का अच्छा जरिया बन रहे हैं। इससे तीन पीढ़ियां एक साथ बैठकर समय बिताती हैं, बातचीत करती हैं और एक-दूसरे को बेहतर तरीके से समझ पाती हैं। अब लोग सिर्फ बाहर खाना खाने नहीं बल्कि कुछ नया अनुभव करने के लिए भी निकलना चाहते हैं। डॉ मोनिका गोयल जैन ने बताया महिलाओं के लिए भी यह आयोजन खास रहा। रोजमर्रा की जिम्मेदारियों के बीच उन्हें अपने दोस्तों के साथ समय बिताने, खेल खेलने और खुलकर बातचीत करने का अवसर मिला।

परंपरा और अपने वर्तमान से जुड़ी रहीं वीणा में प्रकाशित कहानियां

इन्दौर। श्री मध्यभारत हिंदी साहित्य समिति की पत्रिका वीणा देश की एकमात्र पत्रिका है जो शीघ्र ही अपने अनवरत प्रकाशन के सौ वर्ष पूर्ण करेगी।

यह पत्रिका का साहित्यिक यश इसके संपादकों और लेखकों की शाब्दिक नींव पर खड़ा है। एक धरोहर के रूप में वीणा को सहेजा जाना आवश्यक है। आज सौ वर्षों के विविध विधाओं के इतिहास का जीवंत दस्तावेज बनकर यह पत्रिका हमारे मध्य मौजूद है जिसमें कहानी विधा प्रमुख है।

यह विचार श्री राकेश शर्मा, संपादक वीणा पत्रिका ने व्यक्त किए। आप 'वीणा की शताब्दी ङ्क हिंदी में कहानी लेखन' विषय पर आयोजित ऑनलाइन कार्यक्रम में विषय प्रवर्तन कर रहे थे।

कार्यक्रम में पुरवाई पत्रिका के संपादक और वरिष्ठ लेखक, श्री तेजेन्द्र शर्मा, यूके ने भी अपनी शुभकामनाएं दी और वीणा के आयोजन को सराहा। वक्ता के रूप में इस कार्यक्रम में डॉ. वसुधा गाडगिल ने विस्तार से कहानी विधा और वीणा की यात्रा पर प्रकाश डाला। वीणा पत्रिका के प्रारंभिक प्रकाशन वर्षों से लेकर नवीनतम अंकों में प्रकाशित कहानियों पर आपने अपनी बात रखी। आपने मुंशी प्रेमचंद, रविन्द्रनाथ टैगोर जैसे वीणा में छपे लेखकों समेत गांधीजी द्वारा वीणा और श्री मध्यभारत हिंदी साहित्य समिति के संबंध में किए गए प्रयत्नों को रेखांकित किया। वीणा के सौ वर्षों के साहित्यिक प्रवास को विविध कहानियों, किरदारों और भाव यात्रा के साथ आपने अपना उद्बोधन दिया। इस कार्यक्रम में देश विदेश से अनेक विद्वान व साहित्य प्रेमी उपस्थित रहे जिनमें प्रमुख है ओस्लो से सुरेश चन्द्र शुक्ल, हरेराम वाजपेयी, संदीप तोमर, नीलिमा कलारिया, सुषमा व्यास, सीमा व्यास, डॉ. पुरुषोत्तम दुबे, संतोष सुपेकर आदि शामिल थे।

कार्यक्रम में स्वागत उद्बोधन देते हुए समिति के प्रधानमंत्री अरविंद जवलेकर ने वीणा पत्रिका के साहित्यिक अवदान को रेखांकित किया। कार्यक्रम का संचालन अंतरा करवड़े ने किया।

विहिप मातृ शक्ति मालवा प्रांत का तीन दिवसीय प्रांतीय प्रशिक्षण वर्ग सम्पन्न

इन्दौर (इं) मातृ शक्ति को विश्व हिंदू परिषद से जोड़ते हुए समाज एवं राष्ट्र निर्माण में उनकी भूमिका को सशक्त बनाने तथा संगठनात्मक कार्यों के प्रति जागरूक करने के उद्देश्य से अग्रसेन महासभा (जगन्नाथ जिला) में आयोजित विहिप मातृ शक्ति मालवा प्रांत का तीन दिवसीय प्रांतीय प्रशिक्षण वर्ग निष्ठा, देव भक्ति एवं देशभक्ति के संकल्प के साथ संपन्न हुआ। विहिप मातृशक्ति की प्रांत संयोजिका एवं वर्ग प्रमुख आरती जायसवाल के अनुसार इसमें मालवा प्रांत के आठ विभागों में आने वाले 29 जिलों में से 24 की 174 बहनों ने सहभागिता की। उद्घाटन सत्र में विश्व हिंदू परिषद मातृशक्ति की केंद्रीय संयोजिका मीनाक्षी ताई पिस्से ने विश्व हिंदू परिषद एवं मातृ शक्ति परिचय विषय पर प्रेरणादायी पाथेय प्रदान किया। कार्यक्रम में विश्व हिंदू परिषद के प्रांत अध्यक्ष मुकेश जैन, प्रांत मंत्री एवं मातृ दुर्गा के पालक विनोद शर्मा, केंद्रीय ट्रस्टी राजेश गर्ग तथा समाजसेवी सुनीता गर्ग विशेष रूप से उपस्थित रहे।

इंदौर के अभिनेताओं ने मुंबई- पुणे के दर्शकों को किया मंत्र मुग्ध

नाटक 'आजादी के तराने' का हुआ सजीव मंचन

इंदौर। भारतीय जन नाट्य संघ (इप्टा) के बहुचर्चित नाटक आजादी के तराने की पांचवीं प्रस्तुति पुणे में तथा एक दिन पूर्व 24 मई को मुंबई के माटुंगा में संपन्न हुई। यहां मैसूर एसोसिएशन हॉल में मुंबई इप्टा द्वारा 24 वर्ष पश्चात पुनः नाट्य समारोह का आयोजन किया गया था।

निर्धारित कार्यक्रम अनुसार नौ राज्यों की 6 भाषाओं में 15 नाटक मंचित हुए। इप्टा के दिवंगत महासचिव जितेंद्र रघुवंशी की स्मृति को समर्पित नाट्य समारोह में इंदौर इकाई को प्रस्तुति का अवसर तीसरे दिन मिला। आजादी के तराने नाटक की शुरुआत मुंबई के ग्वालिया टैंक मैदान से होकर महाराष्ट्र के चंद्रपुर जिले के चिमूर, उत्तर प्रदेश के बलिया, पश्चिम बंगाल के मिदनापुर पर आकर समाप्त होती है। इन स्थानों पर हुए विद्रोह पश्चात अंग्रेजों की हुकूमत को वहां समाप्त कर दिया गया था। इन तीनों महत्वपूर्ण घटनाओं को जोड़कर बने नाटक आजादी के तराने ने मुंबई और पुणे के सुधी दर्शकों की भावनाओं को झकझोर सा दिया। दर्शकों में विख्यात फिल्म निर्देशक आनंद पटवर्धन एवं सेकुलर फोरम के इरफान अली इंजीनियर की उपस्थिति ने प्रेक्षागृह की गरिमा को बढ़ा दिया।

नाटक का प्रारंभ मखदूम मोइनुद्दीन की प्रसिद्ध नज्म यह जंग है, जंगे आज़ादी से हुआ और

समापन शैलेंद्र के गीत तू जिंदा है तो जिंदगी की जीत पर यकीन कर पर आकर हुआ।

आजादी के लिए संघर्ष का जज्बा, उस आंदोलन में शामिल होने की बेताबी, पुलिसिया दमन, बंगाल की भूख जैसे विभिन्न भावुक और सजीव चित्रण ने दर्शकों को भाव-विभोर कर दिया। इंदौर इप्टा द्वारा कैफी आज़मी सभागृह में फिलिस्तीन और गज़ा की पीड़ा को अभिव्यक्त करती प्रदर्शनी भी लगाई गई थी। आजादी के तराने नाटक की ऐसी ही प्रस्तुति दूसरे दिन पुणे के बीएमसी ऑडिटोरियम में भी संपन्न हुई। शंकर ब्रम्हे समाज विज्ञान ग्रंथालय द्वारा प्रायोजित इस नाटक को यहां भी दर्शकों का भावुक प्रतिसाद मिला।

सूत्रधार दर्शकों को गांधीजी के अंग्रेजों भारत छोड़ो के आह्वान को देश के उन भागों में ले गया, जिन्हें वर्तमान में भुला दिया गया है।

नाटक तेलंगाना में किसानों के विद्रोह, बंगाल के तेभागा आंदोलन, महाराष्ट्र के दहाणु, ठाणे इलाके में आदिवासियों, नौसेना के सैनिकों के विद्रोह, बंबई के कपड़ा मिलों की हड़ताल, आजाद हिंद फौज के सिपाहियों पर चले मुकदमों को समेटते हुए देश की आजादी की घोषणा पर आकर समाप्त होता है।

ख्वाजा अहमद अब्बास द्वारा बच्चों के नाम लिखे खत को आधार बनाकर फ्लोरा बोस के मार्गदर्शन में रंगकर्मी जया मेहता, विनीत तिवारी ने पटकथा तैयार की। गुलरेज खान, सारिका श्रीवास्तव ने निर्देशन किया।

मंच पर नाट्य प्रस्तुति एवं पर्दे के पीछे की गतिविधियों में मधु वेद, राघवेंद्र तिवारी, उजान बनर्जी, गीतांजलि सांवरिया, गुलरेज खान, भास्कर मिश्रा, राशि मालवीय, शब्बीर बोहरा, शाहरुख, शुभम प्रजापति, हरनाम सिंह, निर्मल जैन, अभीत अंबोरिया, आयुष अहिरवार, देवराज सिंह, इशिका शर्मा, नीपा पंड्या, नीता जैन, विशाल यादव, विनीत तिवारी, राजवीर ने योगदान दिया। पाश्व स्वर बाजिला शेख और शर्मिष्ठा घोष का था।